प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से लघु एवं कुटीर उद्योगों को महत्व दिया जाता रहा है,क्योंकि इनकी भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लाख उद्योग जो श्रम प्रधान होने के कारण लघु एवं कुटीर उद्योगों की श्रेणी में आता है लाखों लोगों की जीविकोपार्जन का साधन है,अतः यह भारत में जहां श्रम संसाधन का बाहुल्य है महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लघु एवं कुटीर उद्योगों को भरतीय अर्थव्यवस्था की रीढ माना जाता है और इनकी उपेक्षा नही की जा सकती क्योंकि ऐसा करना भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए आत्महनन के समान होगा।

भारतवासियों को लाख प्रकृति द्वारा विरासत में मिला अमूल्य उपहार है। इसके प्रमाण हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी मिलते है। अथर्ववेद में लाख के कीडों का वर्णन आता है तथा लाख का प्रयोग दवा के रुप में किया जाता है इसका ब्यौरा यजुर्वेद में मिलता है महाभारत में लाक्षागृह अर्थात लाख के घर के निर्माण का वर्णन मिलता है,इससे हमें यह जानकारी मिलती है कि भारत में लाख की खेती हजारों वर्षो पहले से होती आ रही है किंतु व्यवसाय में इसका उपयोग सन् 1900 के बाद से बराबर बढ़ने लगा ,सन् 1900 तक भारतवर्ष एक मात्र उत्पादक एवं निर्यातक देश था, उस समय भारत में विभिन्न कार्यो में इसका प्रयोग प्रारंभ नहीं हुआ था जिससे 95% लाख निर्यात हो जाता था और 5% लाख ही भारत में खपत होता था। समय के साथ साथ भारत में इसका प्रयोग धीरे बढने लगा और वर्तमान में भारत के कुल लाख उत्पादन का 20% लाख भारत में उपयोग हो रहा है तथा 80% लाख विदेशो को निर्यात किया जाता है।

भारत का लाख उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है एवं भारत के प्राकृतिक वातावरण की वजह से किस्म के नाम से भारत आज भी अग्रणी है।

भारत वर्ष में लाख का उत्पादन मुख्यतः झारखंड,पश्चिम बंगाल,छतीसगढ़,उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उडीसा,महाराष्ट, असम, एवं आंध्रप्रदेश में बहुतायत रुप में होता है। भारत में लाख का उत्पादन प्रमुख रुप से पलाश ,बेर एवं कुसुम के वृक्षों पर किया जाता है। इन सभी वृक्षों से जो लाख की प्राप्ति होती है उसमें सबसे अच्छी किस्म की लाख कुसुम वृक्ष की लाख होती है जिसे हम चालू भाषा में अगहनी या कुसुमी लाख कहते है। भारत के विभिन्न प्रांतो में जो कुसुम लाख पैदा होती है,उसमें सबसे अच्छी किस्म का कुसुम लाख छत्तीसगढ में पैदा होता है,एवं छत्तीसगढ में सबसे अच्छी किस्म का लाख काला हंडी, अमलीपदर में होता है।
छत्तीसगढ राज्य गठन के पश्चात् एक महत्वपूर्ण राज्य के रुप में उभरा है। यह निरंतर औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर है। यहॉ वृहत उद्योगों के अतिरिक्त लघुउद्योगों की एक लंबी श्रृंखला है। इस श्रृंखला में एक लाख उद्योग भी है। भारत के कुल लाख उत्पादन का लगभग 35% उत्पादन छत्तीसगढ में होता है। छत्तीसगढ में लाख उद्योग में सक्रिय परिवारो की वार्षिक आय लगभग 71 करोड रुपए है। छत्तीसगढ की आय का एक हिस्सा लाख उद्योग से प्राप्त होता है अर्थात छत्तीसगढ के आर्थिक विकास में लाख उद्योग का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

लाख उद्योग जो लघु एवं कुटीर उद्योग की श्रेणी में आता है एवं निर्यात राजस्व में जिसका महत्वपूर्ण योगदान है एवं श्रम प्रधान होने के कारण आर्थिक विकास में उल्लेखनीय भूमिका है। अतः अध्ययन की विषय वस्तु के रुप में मैने लाख उद्योग का चयन किया है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध विषय के अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित हैः-

1 छत्तीसगढ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना ।

2. छत्तीसगढ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग की संगठन संरचना का अध्ययन करना।

3. छत्तीसगढ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग के विकास की संभावनाओं का पता लगाना ।

4. छत्तीसगढ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन कर सुझाव देना ।

5. छत्तीसगढ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग के लिए उपलब्ध वित्तीय संसाधनों का विश्लेषण करना।

6. लाख के विपणन प्रबंध का अध्ययन करना।

7. लाख निर्यात की संभावनाओं का पता लगाना ।

8. लाख उद्योग की समस्याओं का अध्ययन कर सुझाव देना।

अध्ययन क्षेत्र :-

संपूर्ण छत्तीसगढ राज्य में विभिन्न स्थानों पर कार्यरत लाख उद्योग की इकाईयाँ अध्ययन का क्षेत्र है। राज्य में कुल 29 इकाईयों में से 13इकाईयाँ धमतरी जिले में संचालित है। 6 जुलाई 1998 से अस्तित्व में आए धमतरी जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 4081.93 वर्ग कि.मी. है, जिसका 52प्रतिशत वन क्षेत्र के अंतर्गत आता है, साथ ही धमतरी जिला प्रदेश के सघन वन क्षेत्र बस्तर संभाग का प्रवेश द्वार है, इसलिए लाख उद्योग का कच्चा माल इस जिले में आसानी से उपलब्ध है। धमतरी जिले में लाख उद्योग के अनुकुल वातावरण एवं आवश्यक सभी सुविधाएँ आसानी से उपलबब्ध होने के कारण इसके विकास एवं नए उद्योग की स्थापना हेतु अपार संभावनाएँ है। इन कारणों से मैने अपने अध्ययन के क्षेत्र को विशिष्टीकृत करते हुए धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में सीमित किया है।

परिकल्पनाएँ :-

प्रस्तावित शोध विषय से संबधित परिकल्पनाएँ निम्न है:

1. लाख उद्योग के लिए आवश्यक कच्चा माल,कुशल श्रमिक एवं उपयुक्त वातावरण छत्तीसगढ में उपलब्ध है, अतः छत्तीसगढ में लाख उद्योग के विकास की अपार संभावनाएँ है।
2. लाख से बनी वस्तुओं की विदेशो में पर्याप्त मांग है,अतः लाख के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित करने के पर्याप्त अवसर है।
3. लाख उद्योग श्रम प्रधान होने के कारण लाख उद्योग रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराते में सक्षम है।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व :-

लाख उद्योग में प्रयुक्त लाख वनोपज है। छत्तीसगढ का 44.54प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छिादित है, जिसमें लाख का बहुतायत से उत्पादन होता है। कच्चे माल के उत्पादन के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है अतः यह बडी आबादी के लिए रोजगार का साधन है। स्थानीयकरण के सभी तत्वों की उपलब्धता के कारण धमतरी जिले में लाख उद्योग की संख्या तुलनात्मक रुप से प्रदेश के अन्य जिलों से अधिक है। लाख का उपयोग विभन्न प्रकार की कोटिंग, चिपकाने वाले पदार्थ, बिजली के उपकरण खाने के सामान, दवाओं, कॉस्मेटिक उद्योग आदि में होने के कारण लाख से बनी वस्तुओं की मांग स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर से बढ़कर अन्तराष्ट्रीय स्तर तक फैल गई है, अतः यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने का महत्वपूर्ण उद्योग साबित हो रहा है। रोजगार एवं निर्यात की संभावना के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन सामयिक है।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध के अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों को आधार बनाकर विश्लेषण किया जाएगा ।

प्राथमिक समंक :–

विषय से संबंधित परिशुध्द एवं विश्वसनीय समंक प्राप्त करने के लिए प्राथमिक समंकों का प्रयोग किया जाएगा। इसके लिए अवलोकन साक्षात्कार एवं प्रश्नावली, अनुसूची के माध्यम से आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर गहन अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीयक समंक :–

द्वितीयक समंको के लिए प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा।

प्रकाशित स्त्रोत :–

(1) लाख से संबंधित प्रकाशित पुस्तकें।
(2) वन–विभाग द्वारा प्रकाशित जानकारियाँ एवं पत्रिकाएँ।
(3) जिला उद्योग केन्द्र द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन।
(4) भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं।
(5) पत्रिकाएँ– कुरुक्षेत्र,योजना,शोध उपक्रम,शोध प्रकल्प, उद्यमिता आदि।
(6) समाचार पत्र – दैनिक भास्कर, नवभारत, पत्रिका, इकानॉमिक टाइम्स, दैनिक समाचार पत्र आदि।
(7) चेम्बर ऑफ कामर्स द्वारा प्रकाशित पत्रिका।
(8) इंटरनेट में उपलब्ध सूचनाएँ।
(9) जिला सांख्यिकी पुस्तिका ।
(10) लाख उद्योग संघ द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ।

अप्रकाशित स्त्रोत :–

द्वितीयक आंकडो के लिए आवश्यकता पडने पर अप्रकाशित स्त्रोत जैसे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में एकत्रित शोध ग्रंथ एवं अन्य शोध संस्थानों में एकत्रित शोध ग्रंथ तथा कार्यालयों में अप्रकाशित रुप में रखे गए प्रतिवेदन, सूचनाएँ आदि का प्रयोग किया जाएगा।

उपलब्ध साहित्य :-

(1) विश्वविद्यालय स्तर पर सत्र 1985-86 में कु.पूर्णिमा साहू शासकीय महाविद्यालय धमतरी द्वारा एम.ए. अर्थशास्त्र की उपाधि हेतु श्री एम.ए. खाण्डेकर के निर्देशन में ''धमतरी के लाख उद्योग का संरचनात्मक अध्ययन'' शीर्षक से लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया था, जिसमें उन्होने धमतरी के आसपास लाख की उपलब्धता, लाख उत्पदान की प्रक्रिया एवं धमतरी में कार्यरत लाख इकाईयों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की है। निष्कर्ष रुप में उन्होने धमतरी में लाख उद्योग के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ बतायी है।

(2) श्री के.के.शर्मा, श्री डी.शाहा (INDIAN INSTITUTE OF NATURAL RESINS AND GUMS ,RANCHI) ने लाख उत्पादन से संबंधित सत्र 2010-2011की रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जिसमें उन्होनें लाख उत्पादन में देश के छत्तीसगढ राज्य को अग्रणी बताते हुए यह स्पष्ट किया कि सत्र 2010-2011 में छत्तीसगढ का देश के लाख उत्पादन में 37% योगदान रहा है एवं लाख उत्पादन में वृध्दि तथा लाख उद्योग के विकास की संभावनाओं पर प्रकाश डाला है।

(3) धमतरी जिले के उद्योगपति श्री सुभाषचंद्र जायसवाल ने अपने लेख में लाख उद्योग से वर्तमान में हम क्या-क्या बना रहे है एवं लाख की उपयोगिता तथा इसे कैसे बढाया जा सकता है का उल्लेख किया है एवं यह बताया है कि छत्तीसगढ की भौगोलिक दशाएँ लाख उत्पादन के अनुकूल होने के कारण वर्तमान में किए जा रहे उत्पादन में वृध्दि की जा सकती है, अतः इस हेतु प्रयास किए जाने चाहिए।

(4) सुषमा त्रिपाठी ने ''बस्तर के वनोपज पर आधारित उद्योग की संभावनाएँ'' शीर्षक से रविशंकर विश्वविद्यालय रापपुर में 1992-93 में पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध ग्रथ प्रस्तुत किया । लगभग 20वर्ष पूर्व प्रस्तुत उक्त शोध ग्रथ में शोधार्थी ने बस्तर वनोपज पर आधारित उद्योगों की स्थापना एवं प्रगति की संभावना बताई थी।

(5) डॉ. एस.पी.भारद्वाज (डायरेक्टर) एवं डॉ.एस.डी.शर्मा (प्रिसिपल साईन्टिस्ट) INDIAN AGRICULTUREAL STATISTICS RESEARCH INSTITUTE NEW DELHI) ने वन क्षेत्र के आधार पर लाख उत्पादन का अध्ययन कर रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें यह बताया कि देश मे वनक्षेत्र के आधार पर झारखण्ड का लाख उत्पादन में प्रथम एवं छत्तीसगढ का द्वितीय स्थान है।

प्रस्तावति शोध कार्य से प्राप्त संभावित परिणाम :–

1. प्रदेश में लाख उद्योग की वर्तमान स्थिति की जानकारी ।
2. प्रदेश के आर्थिक विकास में लाख की भूमिका ।
3. विदेशी मुद्रा अर्जित करने में छत्तीसगढ के लाख उद्योग की भूमिका
4. लाख उद्योग के विपणन प्रणाली की जानकारी ।
5. लाख उद्योग में संलग्न श्रमिक एवं उद्योगपति की आर्थिक प्रगति की जानकारी ।
6. धमतरी जिले के आर्थिक विकास में लाख उद्योग का योगदान ।
7. प्रदेश एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग के विकास की संभावनाओं का आंकलन ।

छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग का विकास एवं संभावनाएं

(धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावित शोध प्रबंध की अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम : प्रस्तावना एवं प्रविधि

1.1 शोध विषय का चयन

1.2 अध्ययन का उद्देश्य

1.3 अध्ययन का क्षेत्र

1.4 अध्ययन की परिकल्पनाएं

1.5 शोध प्रविधि

1.6 अध्ययन की सीमाएं

1.7 शोध प्रबंध की रूपरेखा

1.8 उपलब्ध साहित्य की विवेचना

अध्याय द्वितीय : छत्तीसगढ़ राज्य का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आर्थिक परिचय

2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.2 भौगोलिक स्थिति

2.3 भू–गर्भीय संरचना

2.4 जलवायु

2.5 प्राकृतिक वनस्पति

2.6 खनिज

2.7 कृषि

2.8 जनसंख्या

2.9 शिक्षा

2.10 उद्योग

अध्याय तृतीय : लाख का परिचय, इतिहास एवं महत्व

3.1 लाख का परिचय

3.2 उद्योग का आशय एवं प्रकार

3.3 लाख एक लघु एवं कुटीर उद्योग

3.4 लाख के प्रकार

3.5 लाख पालन

3.6 लाख प्रसंस्करण

3.7 भारत में लाख उत्पादन का इतिहास

3.8 छत्तीसगढ़ में लाख उत्पादन का इतिहास

3.9 लाख का महत्व

अध्याय चतुर्थ : छत्तीसगढ़ राज्य में लाख उद्योग की विकासात्मक स्थिति

4.1 छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग की प्रगति

- 4.1.1 रायपुर संभाग में लाख उद्योग की प्रगति
- 4.1.2 बिलासपुर संभाग में लाख उद्योग की प्रगति
- 4.1.3 बस्तर संभाग में लाख उद्योग की प्रगति
- 4.1.4 सरगुजा संभाग में लाख उद्योग की प्रगति

4.2 छ.ग. में लाख उद्योग में सिनियोजित पूंजी

4.3 छ.ग. में लाख उत्पादन की स्थिति

4.4 छ.ग. में लाख उद्योग के विकास में शासन की भूमिका

अध्याय पंचम : धमतरी जिले का सामान्य परिचय

5.1 धमतरी जिले का सामान्य परिचय

- 5.1.1 भौगोलिक
- 5.1.2 प्रशासनिक
- 5.1.3 जलवायु
- 5.1.4 नदियां
- 5.1.5 कृषि
- 5.1.6 वन
- 5.1.7 खनिज

5.1.8 जनसंख्या

5.1.9 शिक्षा

5.1.10 परिवहन

5.1.11 उद्योग

अध्याय षष्टम : धमतरी जिले में लाख उद्योग

6.1 धमतरी जिले में लाख उद्योग का विकास

6.2 जिले में लाख उद्योग का संरचनात्मक अध्ययन

6.2.1 कच्चे माल की उपलब्धता एवं स्त्रोत

6.2.2 विनियोजित पूंजी का स्वरूप

6.2.3 विनियोजित पूंजी का स्त्रोत

6.2.4 उत्पादन प्रविधि एवं तकनीक

6.2.5 श्रम की उपलब्धता

6.2.6 विक्रय व्यवस्था

6.2.7 लाख उत्पादन

अध्याय सप्तम : धमतरी जिले में लाख उद्योग के विकास में शासन की भूमिका

अध्याय अष्टम : लाख उद्योग के विकास की समस्याएं एवं समाधान हेतु सुझाव (छत्तीसगढ़ एवं धमतरी जिले के संदर्भ में)

8.1 समस्याएं

8.2 लाख उद्योग की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव

अध्याय नवम : लाख उद्योग के विकास की सम्भावनाएं

9.1 छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग के विकास की संभावनाएं

9.2 धमतरी जिले में लाख उद्योग के विकास की संभावनाएं

अध्याय दशम : उपसंहार, नि"क"र्ा एवं सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1	अग्रवाल	डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा डॉ. अवनिश कुमार	उद्यमिता के मूल आधार	साहित्य भवन पब्लिकेशन 2009
2	अग्रवाल	बी.के. पाण्डे पी.डी.	भारतीय अर्थशास्त्र	यूनिवर्सल बुक डिपो
3	अग्रवाल	डॉ.गोपाल कृष्ण पाण्डेय	सामाजिक अनुसंधान की पध्दतियाँ	साहित्य भवन पब्लिकेशन 2009
4	बघेल	डॉ. शील स्वरूप डॉ. डी.एस.	सामाजिक अनुसंधान	साहित्य भवन इतिहास
5	भगोलीवाल	डॉ. टी.एन.	श्रम अर्थशास्त्र एवं औद्योगिक संबध	साहित्य भवन आगरा 1995
6	चट्टोपाध्याय	डॉ. शैलेष	Introduction to lac & lac culture	राँची पब्लिकेशन 2011
7	चतुर्वेदी	डॉ. एम.सी.	श्रम अर्थशास्त्र के सिद्धांत एवं समस्याएं	गोयल पब्लिकेशन मेरठ
8	दत्त	रूद्र एवं सुन्दरम	भारतीय अर्थव्यवस्था	एसचन्द्र पब्लिकेशन नई दिल्ली
9	देवांगन	रमेशचंद	प्रतियोगिता सारांश छत्तीसढ समग्र	
10	ग्लोवर	पी.एम.	lac cultivation in india	राची पब्लिकेशन
11	गोयल	डॉ. अनुपम	व्यवहारिक अर्थशास्त्र	पुस्तक प्रकाशन

12 गुप्ता	डॉ. एस.पी.	आधुनिक अर्थव्यवस्था	एसचन्द्र पब्लिकेशन नई दिल्ली
13 इस्माईल भाई		छत्तीसगढ सामान्य ज्ञान	नवबोध प्रकाशन 2012
14 जैन	डॉ. एस.पी.	अन्तराष्ट्रीय विपणन	साहित्य भवन पब्लिकेशन
15 खन्ना	लक्ष्मण सिंह	वनवर्धन	देहरादून प्रकाशन
16 खन्ना	लक्ष्मण सिंह	वनविज्ञान	देहरादून प्रकाशन 2005
17 खन्ना	लक्ष्मण सिंह	वनविधी	देहरादून प्रकाशन 2009
18 मिश्र	जगदीश नारायण	भारतीय अर्थव्यवस्था	किताब महल इलाहाबाद 2001
19 मुखर्जी	डॉ.आर.एन.	सामाजिक सर्वेक्षण	विवेक प्रकाशन दिल्ली
20 पाटनी	आर.एल.	संगठन प्रबंध व वित्त औद्योगिक अर्थशास्त्र	गोयल पब्लिकेशन मेरठ
21 पाटनी	आर.एल.	औद्योगिक अर्थशास्त्र	गोयल पब्लिकेशन हाऊस मेरठ
22 पटेल	डी.सी.	छत्तीसगढ सामान्य अध्ययन	मुस्कान पब्लिकेशन
23 शर्मा	विरेन्द्र प्रकाश	रिसर्च मैथडॉलॉजी	पंचशील प्रकाशन जयपुर
24 शुक्ल	एस.एम.	सांख्यिकी के सिद्धांत	साहित्य भवन आगरा
25 शुक्ल	डॉ. एस.सी. सहाय	व्यवसाय प्रबंध	साहित्य भवन आगरा

पत्र पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र :–

1. कुरुक्षेत्र (मासिक पत्रिका)
2. योजना (मासिक पत्रिका)
3. शोध उपक्रम
4. शोध प्रकल्प
5. संदर्भ छत्तीसगढ
6. लद्यु उद्योग समाचार
7. सामान्य अध्ययन भूगोल (भारत एवं विश्व)
8. प्रतियोगिता दर्पण (उपकार प्रकाशन)।
9. लाख की खेती (कब ?क्यों ?कैसे ?)।
   भारतीय लाख अनुसंधान संस्थान नामकुम (रॉची)।
10. दैनिक भास्कर, हितवाद,नवभारत,पत्रिका समाचार पत्र।
11. छत्तीसगढ स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ रुरल डेव्ल्पमेंट।
12. लाख की खेती (भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोद संस्थान राची)
13. http://ilri.ernet.in
14. उद्यमिता समाचार पत्र
15. मानव
16. मध्यप्रदेश सदेश
17. खादी ग्रामोद्योग
18. सम्प्रेषण

*****

शोध निर्देशक

डॉ. चन्द्रशेखर चौबे

PRINCIPAL
Govt. College Bhakara

सह निर्देशक

डॉ. एस.एस.खनूजा